DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

शुकनासोपदेश

LIVE 19-06-2024 05:00 PM

बाणभट्ट का परिचय

बाणभट्ट संस्कृत साहित्य के ऐसे कवि हैं, जिनका सम्पूर्ण परिचय उनकी रचनाओं में ही प्राप्त हो जाता है। कादम्बरी की भूमिका तथा हर्षचरित के प्रथम दो उच्छ्वासों में बाणभट्ट ने अपनी वंश परम्परा का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। तदनुसार ये वात्स्यायन गोत्र के ब्राह्मण थे। बाण बिहार के शाहबाद (आरा) जनपद के प्रीतिकूट के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम चित्रभानु व माता का नाम राजदेवी था। माता का देहान्त बाण के शैशवावस्था में ही हो गया था। पिता ने ही माता-पिता दोनों की भूमिका का वात्सल्यपूर्वक निर्वाह कर इनका पालन-पोषण किया। बाण जब 14 वर्ष के थे तो उनके पिता का भी स्वर्गवास हो गया।

पिता की मृत्यु के बाद बाण अपने मित्रों के साथ ही समय यापन करने लगे । इन्होंने किशोरावस्था में देशभ्रमण कर लिया और फिर वापस अपने जन्मस्थान पर आ गए थे। बाण की उच्चकोटिक विद्वत्ता से कुण्ठित होकर, कुछ अन्य ईर्ष्यालू विद्वानों ने राजा हर्षवर्धन से उनकी शिकायत की जिसके कारण उन्हें राजा हर्षवर्धन ने राजसभा में बुलाकर 'अयमसौ भुजङ्गः' कहकर अपमानित किया। बाद में बाण ने धैर्यपूर्वक अपनी स्थिति स्पष्ट कर हर्षवर्धन का भ्रम दूर किया। माना जाता है कि हर्षवर्धन ने बाणभट्ट की विद्वत्ता से प्रसन्न होकर उन्हें राज्याश्रय प्रदान किया। इसी क्रम में बाणभट्ट ने प्रीतिकूट आकर 'हर्षचरित' की रचना की और राजा के चरित्र को काव्य के माध्यम से अमर कर दिया ।

बाणभट्ट का समय - गद्यकाव्यकार बाण सम्राट हर्षवर्धन की राजसभा के सभापण्डित थे, अतः उनके समकालिक माने गए हैं। इस आधार पर इनका समय 606 से 645 ई. तक माना जा सकता है । राजा हर्षवर्धन ने इस समय सीमा में उत्तरी भारत में शासन किया था ।

चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने भारत भ्रमण के लेख में भी हर्षवर्धन और बाणभट्ट का वर्णन किया है। ह्वेनसांग भारत में 629 से 645 ई. के बीच आए थे। अतः इन सब तथ्यों को देखते हुए बाणभट्ट का समय 620 ई. के समीप का माना जा सकता है |

बाणभट्ट ने अपने लेखों में अपने पूर्ववर्ती लेखकों और कृतियों का भी वर्णन किया है जैसे - भास, वासवदत्ता, कालिदास, बृहत्कथा इत्यादि । भोजराज

ने भी बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में सरस्वतीव्याकरण में "यादृग् गद्यविधौ बाणः पद्यबन्धे न तादृशः" कहकर उन्हें अपने पूर्व का सिद्ध किया है। इन प्रमाणों के आधार पर इन्हें सप्तम शताब्दी के पूर्वार्ध का माना जा सकता है ।

बाणभट्ट की रचनाएं - बाण ने संस्कृत साहित्य की सर्वोत्कृष्ट कृतियों की रचना कर संस्कृत साहित्य ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व के काव्यकारों में भी विशेष यश प्राप्त किया है ।

बाणभट्ट की रचनाएं निम्नलिखित हैं –

1. हर्षचरित (आख्यायिका),
2. कादम्बरी (कथा),
3. चण्डीशतकम् (श्लोकपूर्ण स्तुति)
4. मुकुटताडितक (नाटक),
5. पार्वती - परिणय (नाटक) ।

शुकनासोपदेश का परिचय

शुकनासोपदेश कादम्बरी का ही एक भाग है किन्तु इसका अपना स्वतन्त्र महत्त्व है । यह एक उपदेशात्मक ग्रन्थ है जिसमें बाणभट्ट ने जीवन दर्शन के प्रत्येक दृष्टिकोण को वर्णित किया है । तारापीड नामक राजा का अनुभवी व नीति-निपुण शुकनास नामक मन्त्री राजकुमार चन्द्रापीड (तारापीड के पुत्र) को राज्याभिषेक से पूर्व वात्सल्य भाव से उपदेश देकर उसे रूप, यौवन, प्रभुता तथा ऐश्वर्य जैसे दुर्गुणों से सावधान रहने की शिक्षा प्रदान करता है । शुकनासोपदेश में इसी उपदेश का वर्णन है ।

कादम्बरी का परिचय

कादम्बरी महाकवि बाणभट्ट की संस्कृत गद्य साहित्य के लिये अमर कीर्ति है । कादम्बरी में बाण के साहित्य का चरमोत्कर्ष प्राप्त होता है। यह कथा जगत् की सर्वोत्कृष्ट कृति मानी जाती है। बाणभट्ट ने कादम्बरी के पूर्वार्द्ध में मंगलाचरण और मुख्यकथा का वर्णन किया है। उन्होंने 20 पद्यों में मंगलस्तुति, गुरु तथा वंश परिचय, सज्जन स्तुति एवं दुर्जन- निन्दा का उल्लेख करते हुए अपनी कथा सकुशल प्रस्तुत की है।

यह कहा जाता है कि बाणभट्ट की मौलिक कृति केवल पूर्वार्ध ही है, जो सम्पूर्ण कादम्बरी का दो तिहाई भाग है। उत्तरार्ध भाग की रचना उनके पुत्र भूषणभट्ट ने उनकी मृत्यु के बाद की है । कादम्बरी के विषय में किसी कवि

ने कहा है - कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते । कादम्बरी का पूर्वार्ध भाग इस प्रकार आरम्भ होता है-

वैशम्पायन

चन्द्रापीड

राजा शूद्रक एक दिन अपनी सभा के राजसिंहासन पर आरूढ थे, तभी वहाँ पर एक चाण्डालकन्या पिंजरे में एक शुक को लेकर आती है। वैशम्पायन नामक यह शुक अद्भुत एवं मेधावी है। वह राजसभा में आते ही अपना दाँया पैर आगे कर श्लोक उच्चारण कर राजा का अभिनन्दन करता है। यह देख सम्पूर्ण सभा में कौतूहल उत्पन्न हो जाता है। जब राजा भी उत्सुकता से उसका परिचय जानना चाहता है, तब तोते ने अपना परिचय देते हुए कहा कि मैं विन्ध्याटवी के तट पर शाल्मली वृक्ष पर रहता था, वहाँ पर अनेक शुक परिवार रहते थे, उनमें से एक वृद्ध शुक की मैं

सन्तान हूँ। एक बार शबर सेनापति अपनी सेना के साथ विन्ध्याटवी से निकला। उनकी सेना में से ही एक सैनिक कई शुकों को मारकर अपने साथ ले गया किन्तु मैं उड़ने में अभी असमर्थ था कथंचित् अपने प्राण बचाने में सफल रहा और सरोवर पर स्नान के लिए आए मुनि पुत्रों द्वारा देखा गया। वे मुझे महर्षि जाबालि के आश्रम में ले गए। मैं वहाँ के वातावरण से बहुत ही प्रभावित हुआ। महर्षि ने मुझे देखा और कुछ देर ध्यान कर कहा कि यह शुक अपने कर्मों का ही फल भोग रहा है । यह सुन वहाँ सभी मेरी कथा सुनने के लिए व्याकुल हो गए और महर्षि से मेरी कथा सुनाने का आग्रह करने लगे। तब महर्षि ने कथा सुनाना प्रारम्भ किया किन्तु उससे पहले कहा यह शुक अपनी कथा सुनकर अपने पूर्वजन्म को जान जाएगा,

इस प्रकार मुनि ने विन्ध्याटवी में मेरे जन्म से जाबालि मुनि के आश्रम पहुँचने तक की कथा इस प्रकार वर्णित की - उज्जयिनी में तारापीड नाम का राजा था, जिसकी रानी विलासवती थी। उसका एक कुशल मन्त्री शुकनास था, जिसकी पत्नी का नाम मनोरमा था। राजा ने पुत्र प्राप्ति के लिए देवार्चन किया जिससे उन्हें एक पुत्र की प्राप्ति हुई, जिसका नाम चन्द्रापीड रखा गया । चन्द्रापीड के जन्म के दिन शुकनास के घर भी पुत्र हुआ, जिसका नाम ज्योतिषियों ने वैशम्पायन रखा। दोनों कुमारों को ज्ञान प्राप्ति के समान अवसर दिए गए। विद्या ग्रहण करने के बाद चन्द्रापीड का राज्याभिषेक हुआ। दोनों मित्र चन्द्रापीड एवं वैशम्पायन दिग्विजय के लिये निकल पड़े। तीन वर्ष दिग्विजय करने के बाद दोनों कुमार एक दिन सुन्दर

किन्नर दम्पती का पीछा करते हुए अच्छोद सरोवर पहुँच गये। वहाँ पर चन्द्रापीड ने वीणा पर गान करती हुई महाश्वेता नामक गन्धर्व कन्या को देखा । चन्द्रापीड ने उसके संन्यासिनी होने का कारण पूछा। महाश्वेता ने बताया कि एक समय पुण्डरीक और मैं एक दूसरे पर मोहित हो गए। पुण्डरीक ने विरह की आकुलता में अपने प्राण त्याग दिए। यह जानकर मैं भी मरने को उद्यत हुई किन्तु चन्द्रमा ने पुण्डरीक से पुनः मिलाप का आश्वासन दिया, तब से मैं यहाँ उसकी प्रतीक्षा कर रही हूँ । महाश्वेता की सखी कादम्बरी ने भी पुण्डरीक के पुनः मिलने तक अविवाहित रहूँगी, ऐसा प्रण लिया है।

महाश्वेता चन्द्रापीड को कादम्बरी के पास ले गई एवं दोनों ही प्रथम साक्षात्कार में ही परस्पर मोहित हो गए किन्तु राजा का समाचार पाते ही

चन्द्रापीड वैशम्पायन को वहीं छोड़ महल चले आए किन्तु लम्बे समय तक वैशम्पायन के महल न आने पर चन्द्रापीड उसे खोजता हुआ वन पहुँचा । वहाँ ज्ञात हुआ की वैशम्पायन महाश्वेता पर मोहित हो गया था, जिस कारण से महाश्वेता ने वैशम्पायन को शुक होने का शाप दिया और वो मर गए यह जानकर दुःख में व्याकुल चन्द्रापीड ने भी अपना शरीर त्याग दिया ।

चन्द्रापीड की मृत्यु का समाचार सुनते ही कादम्बरी भी मरने को तैयार हो गई किन्तु आकाशवाणी हुई की "दोनों धैर्य रखो। दोनों का अपने प्रेमियों से पुनः मिलन होगा।" यह कथा सुन शुक को अपना पूर्व प्रेम याद आ गया और वह उसे खोजने चल पड़ा किन्तु मध्य में ही चाण्डालकन्या द्वारा पकड़ा गया और आपके पास लाया गया। इतना कहकर शुक शान्त हो जाता है।

चाण्डालकन्या ने कहा मैं ही पुण्डरीक की माँ हूँ और आप चन्द्रापीड़ हैं। यह सुनते ही उसे भी पूर्व जन्म याद आ गया और शुक और राजा ने अपना शरीर त्याग दिया क्योंकि उनकी शाप की अवधि समाप्त हो गई थी।

चन्द्रापीड़ एवं पुण्डरीक का पुनः जन्म हुआ वे सब पुनः मिले और उनके माता-पिता भी वहाँ पहुँच गये इस प्रकार कादम्बरी कथा का सुखद अन्त होता है ।

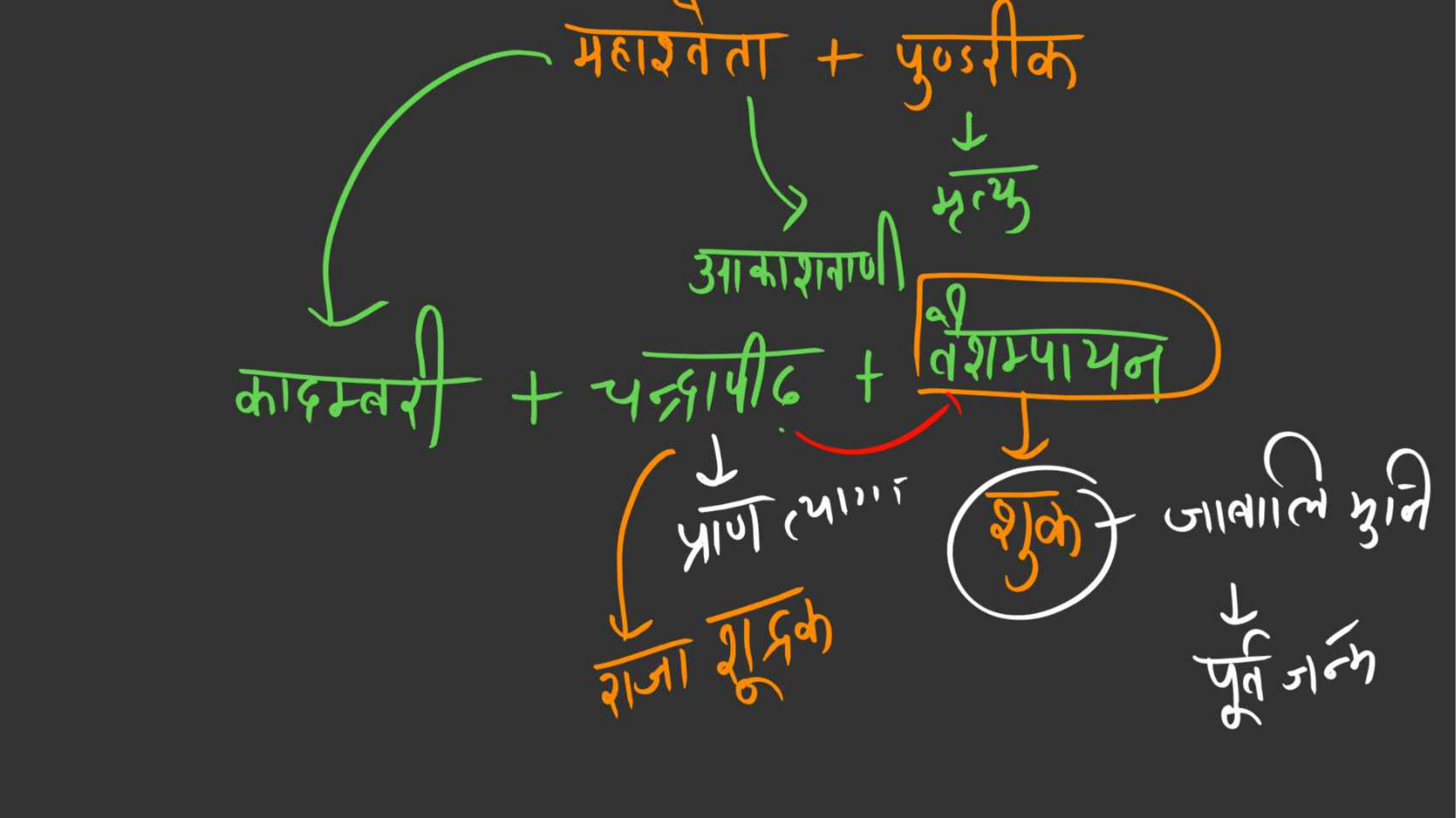
महाश्वेता + पुण्डरीक
मृत्यु
आकाशवाणी
कादम्बरी + चन्द्रापीड + वैशम्पायन
प्राण त्याग
शुक
जाबालि मुनि
राजा शूद्रक
पूर्व जन्म

शुकनासोपदेश का परिचय

बाणभट्ट द्वारा रचित कादम्बरी का ही एक भाग है शुकनासोपदेश । शुकनासोपदेश कादम्बरी का अंश होते हुए भी स्वतन्त्र महत्त्व रखता है। राजकुमार के राज्याभिषेक से पूर्व मन्त्री शुकनास के द्वारा दिए गये उपदेश जैसे अनर्थ परम्परा, युवावस्था का प्रभाव, गुरु का महत्त्व, लक्ष्मी की प्रकृति, राजाओं के प्रति लक्ष्मी के आचरण तथा उसका प्रभाव, कूटनीति तथा राजा की प्रकृति इत्यादि शुकनासोपदेश का विषय हैं। शुकनास राजकुमार को उपदेश देते हुए कहते हैं कि इन दुर्गुणों में से एक भी आपका अनर्थ कर सकता है, फिर सबका होना तो परम नाश का कारण होगा ही। युवावस्था के आने पर शास्त्रज्ञान से पूर्ण व्यक्ति की भी बुद्धि मलिन हो

जाती है। इस अवस्था में आकृष्ट करने वाली शक्तियाँ अत्यधिक प्रबल होती हैं, जो आपको अन्त में (युवावस्था के अन्त में) अत्यधिक दुःख देंगी। विषयों की अतीव आसक्ति मानव को कुमार्ग पर ले जाकर उसका नाश कर देती है।

गुरू की महिमा - जिस प्रकार कर्ण गुहा में विद्यमान जल निर्मल होने पर भी वेदना उत्पन्न करता है, ठीक उसी प्रकार दुर्जनों को पावन निर्मल गुरुजनों के निष्कपट व कल्याणप्रद उपदेश वेदनापूर्ण लगते हैं। कहीं सत्पुरुषों को गुरु वाणी ऐसी लगती है, मानो शङ्खों का आभूषण गज के मुख में सुशोभित हो गया है। गुरु का ज्ञान मनुष्यों को ऐसे प्रकाशित करता है जैसे प्रारम्भ की शशि सघन अन्धकार को दूर कर देती है। गुरूपदेश

सभी प्रकार की बुराई को समाप्त कर प्रगति का मार्ग है। बालों को सफेद किए बिना रोग से रहित वार्द्धक्य है ।

गुरूपदेश की महिमा राजाओं के लिये अधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि राजाओं को उपदेश देने वाले कम ही होते हैं। राजा लोग उपदेश कम ही सुनते हैं और यदि सुन भी लें तो गज की तरह एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हैं। जिस कारण गुरु दुःखित हो जाते हैं और राजा का भी शीघ्र ही पतन हो जाता है।

लक्ष्मी का स्वभाव- शुकनासोपदेश में लक्ष्मी की प्रकृति के विषय में बहुत अच्छा वर्णन प्राप्त होता है। यहाँ पर मन्त्री शुकनास कहते हैं कि अपना परिचय न रखने वाली इस संसार में ये लक्ष्मी सबसे नीच है क्योंकि यदि ये

आपको मिल जाती है, तो भी बड़ी कठिनाई से ही आपके पास रहती है । योद्धा एवं हाथियों से संरक्षित करने पर भी ये भाग जाती है। यह भ्रमणशील है एवं यह शक्तिशाली राजा को भी छोड़कर चली जाती है। जिस प्रकार लता वृक्ष का आलिङ्गन करती है उसी प्रकार यह नीच जनों का आलिङ्गन करती है। यह बुलबुलों की भाँति चंचल है। यह क्षणिक शोभा प्रदान करने वाली है। इस प्रकार कई बातें शुकनासोपदेश में लक्ष्मी के बारे में वर्णित हैं ।

राजाओं के प्रति लक्ष्मी का आचरण - भाग्यवश अपनाए गए राजा विलासी व दुराचारी बन जाते हैं तथा क्रोधादि बुराइयों के शिकार हो जाते हैं।

दुष्टों की कूटनीति और राजा की प्रकृति - दुष्ट लोग स्वार्थ साधने के लिए राजा की सभा में गृद्ध पक्षी की तरह राजसभा में बक बनकर बैठे रहते हैं और अज्ञानी राजा भी उनकी प्रशंसा को अपना आदर समझता है जो उसके पतन का कारण बनते हैं।

शुकनास अपने उपदेश के अन्त में कहता है कि हे राजकुमार ! यह शासन व्यवस्था एवं यौवन अवस्था आपके बुद्धि-विवेक को न हर ले, ऐसा प्रयास करें, जिससे आपकी समस्त प्रजा सदैव आपका आदर करती रहे । चन्द्रापीड शुकनास के उपदेश से मानो फिर से निर्मल और कान्तियुक्त सा हो गया ।

इस प्रकार शुकनास द्वारा दिए गए चन्द्रापीड को उपदेश में कवि की प्रतिभा का चरमोत्कर्ष दिखाई देता है। इसमें बाणभट्ट का शब्द चातुर्य प्रशंसनीय है ।

परिचय

↓

शुकनासोपदेश